

श्री हनुमान चालीसा

आरती, पूजा विधि, बजरंग बाण, श्री राम स्तुति
और हिन्दी अर्थ सहित



ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

39

पूजन विधि

श्री हनुमानजी की नित्य पूजा में साधक शुद्ध वस्त्र (यथा संभव लाल) पहनकर पूर्व अथवा उत्तर की ओर मुख करके बैठ साधना में सहायक श्री हनुमान जी की मूर्ति, चित्र अथवा तांबे या भोज पत्र पर अंकित यंत्र सामने रखें। पूजन सामग्री में लाल पुष्प, अक्षत्, सिन्दूर का प्रयोग होता है। प्रसाद में बून्दी, भुने चने व चिरौंजी दाना तथा नारियल चढ़ता है। साधक हाथ में अक्षत् व पुष्प लेकर निम्नलिखित मंत्र से श्री हनुमानजी का ध्यान करें।



अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं, दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रण्यम् । सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं, रघुपति प्रियभक्तं वातजातं नमामी । मनोजवं मारुततुल्यवें जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् । वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ॥

इसके उपरान्त पुष्प, अक्षत् आदि अर्पित कर चालीसा का पाठ करें। पाठ समाप्तकर ॐ हनु हनु हनु हनुमते नमः मंत्र का चन्दन आदि की माला से १०८ बार जाप विशेष फलदायी है।

InstaPDF
INSTAPDF.IN

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

हनुमान चालीसा पाठ

॥ दोहा ॥

श्रीगुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि।
बरनऊं रघुवर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि॥
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन-कुमार।
बल बुद्धि विद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस विकार॥

॥ चौपाई ॥

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर। जय कपीस तिहुं लोक उजागर॥
रामदूत अतुलित बल धामा। अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा॥
महाबीर बिक्रम बजरंगी। कुमति निवार सुमति के संगी॥
कंचन बरन बिराज सुबेसा। कानन कुंडल कुंचित केसा॥
हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै। कांधे मूँज जनेऊ साजै॥
संकर सुवन केसरीनंदन। तेज प्रताप महा जग बन्दन॥
विद्यावान गुनी अति चातुर। राम काज करिबे को आतुर॥
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया। राम लखन सीता मन बसिया॥
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा। बिकट रूप धरि लंक जरावा॥
भीम रूप धरि असुर संहरे। रामचंद्र के काज संवारे॥

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम
लाय सजीवन लखन जियाये । श्रीरघुबीर हरषि उर लाये ॥
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई । तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ॥
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं । अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ॥
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा । नारद सारद सहित अहीसा ॥
जम कुबेर दिगपाल जहां ते । कबि कोबिद कहि सके कहां ते ॥
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा । राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥
तुम्हरो मंत्र बिभीषण माना । लंकेस्वर भए सब जग जाना ॥
जुग सहस्र जोजन पर भानू । लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं । जलधि लांघि गये अचरज नाहीं ॥
दुर्गम काज जगत के जेते । सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥
राम दुआरे तुम रखवारे । होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥
सब सुख लहै तुम्हारी सरना । तुम रक्षक काहू को डर ना ॥
आपन तेज सम्हारो आपै । तीनों लोक हांक तें कांपै ॥
भूत पिसाच निकट नहिं आवै । महाबीर जब नाम सुनावै ॥
नासै रोग हरै सब पीरा । जपत निरंतर हनुमत बीरा ॥
संकट तें हनुमान छुड़ावै । मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ॥
सब पर राम तपस्वी राजा । तिन के काज सकल तुम साजा ।
और मनोरथ जो कोई लावै । सोइ अमित जीवन फल पावै ॥
चारों जुग परताप तुम्हारा । है परसिद्ध जगत उजियारा ॥
साधु-संत के तुम रखवारे । असुर निकंदन राम दुलारे ॥

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता । अस बर दीन जानकी माता ॥

राम रसायन तुम्हरे पासा । सदा रहो रघुपति के दासा ॥

तुम्हरे भजन राम को पावै। जनम-जनम के दुख बिसरावै ॥

अन्तकाल रघुवर पुर जाई। जहां जन्म हरि-भक्त कहाई ॥

और देवता चित्त न धर्ड। हनमत सेड सर्ब सुख कर्ड ॥

संकट कै स्त्रै सब पीरा । जो सम्मिलन मत बलबीरा ॥

ਕੁਮਾਰੀ ਹੈ ਵਨਸਪਤ ਸੋਚਾਰੀ। ਕਸਾ ਕਰਹ ਸਾਫ਼ਦੇਵ ਦੀ ਜਾਰੀ॥

ਤੇ ਸਾ ਸਾ ਸਾ ਸਾ ਸੌਂ। ਅਥੀ ਅੰਹੀ ਸਾ ਸਾ ਸੌਂ।

ਆ सਤ ਪਾਰ ਪਾਠ ਪਾਰ ਪਗੜਾ ਛੁਪਾਹ ਪਾਦ ਮਨ ਸੁਖ ਹਾਇ॥

जा यह पड़े हनुमान चालासा। हाय साङ्क साखा गरासा॥

॥ दोहा ॥

पवन तनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप॥

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

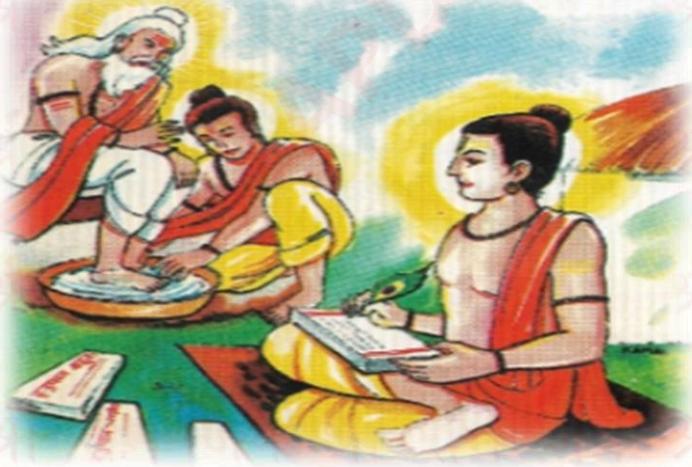
ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

हनुमान चालीसा हिन्दी अनुवाद सहित

॥ दोहा ॥

श्रीगुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि।
बरनऊं रघुवर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि ॥

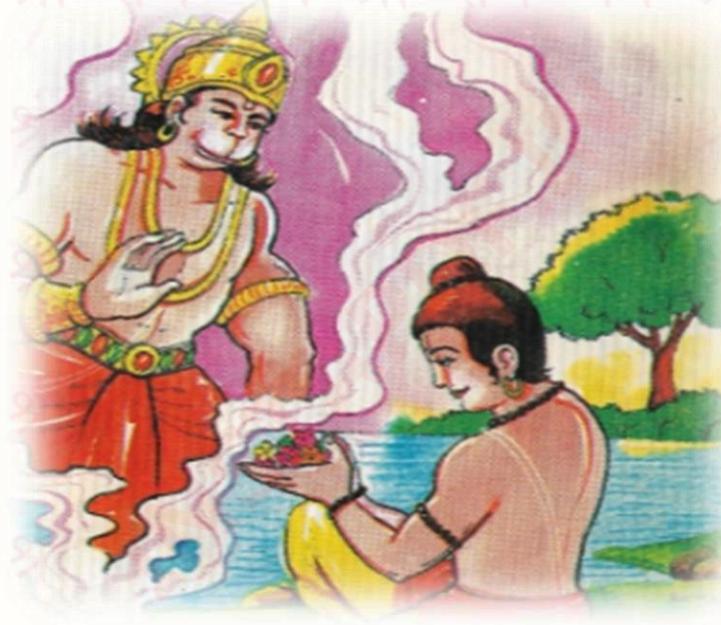


अर्थः श्री गुरुजी महाराज के चरण कमलों की धूलि से अपने मना रूपी दर्पण को पवित्र करके श्री रघुवीर के निर्मल यश का न करता हूँ, जो चारों फल (धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष) देने वाला है।

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ
जय श्री राम जय श्री राम || दोहा || जय श्री राम
जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

बुद्धिहीन तनु जानिके, मैं सुमिरौं पवन-कुमार।
बल बुद्धि विद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस विकार॥

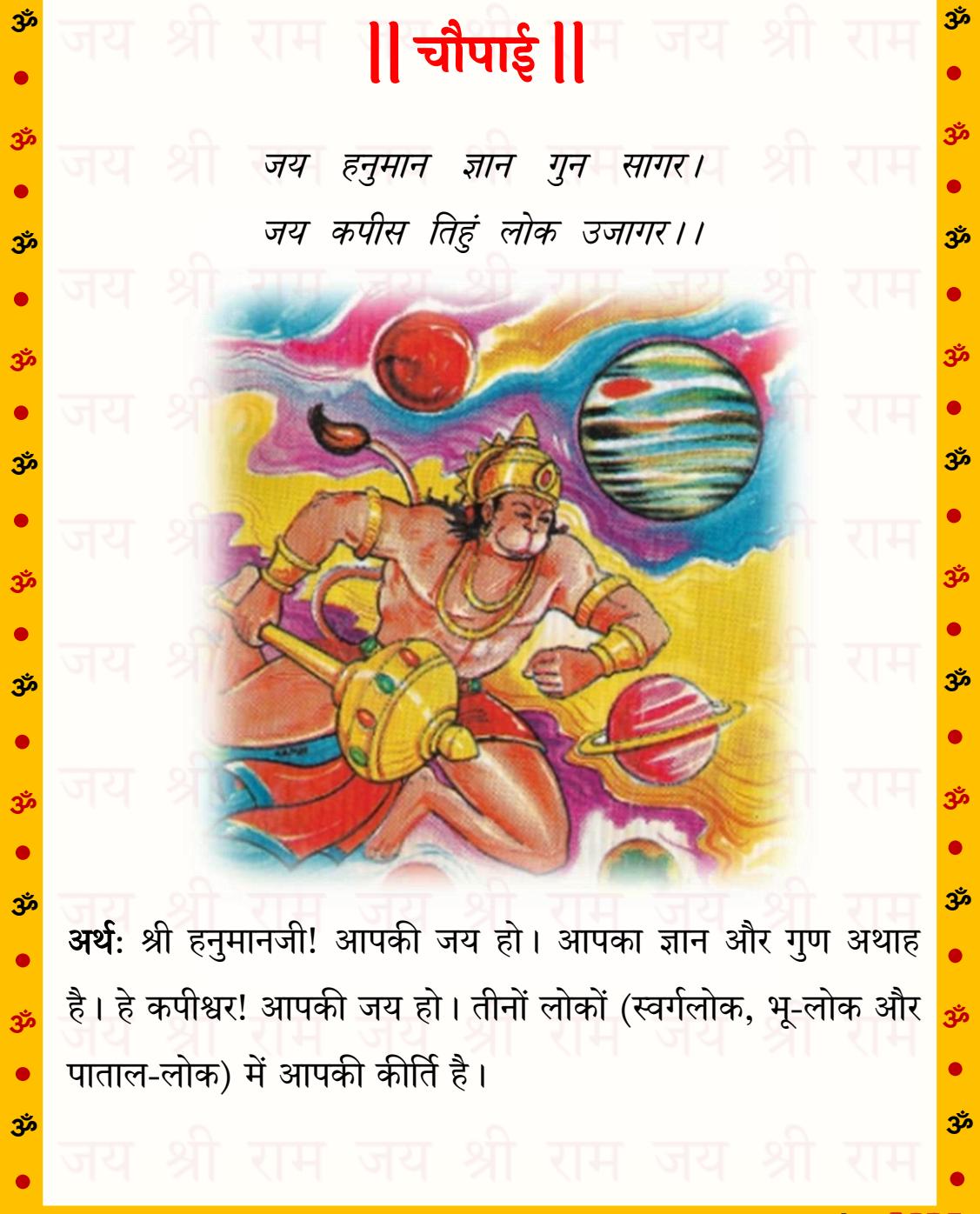


अर्थः हे पवनकुमार! मैं आपका स्मरण करता हूँ। आप तो जानते हैं कि
मेरा शरीर और बुद्धि निर्बल है। मुझे शारीरिक बल, सद्बुद्धि एवं ज्ञान
दीजिए और मेरे दुःखों व दोषों का नाश कर दीजिए।

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ



॥ चौपाई ॥

जय हनुमान ज्ञाने गुण सागर।

जय कपीस तिहं लोक उजागर॥

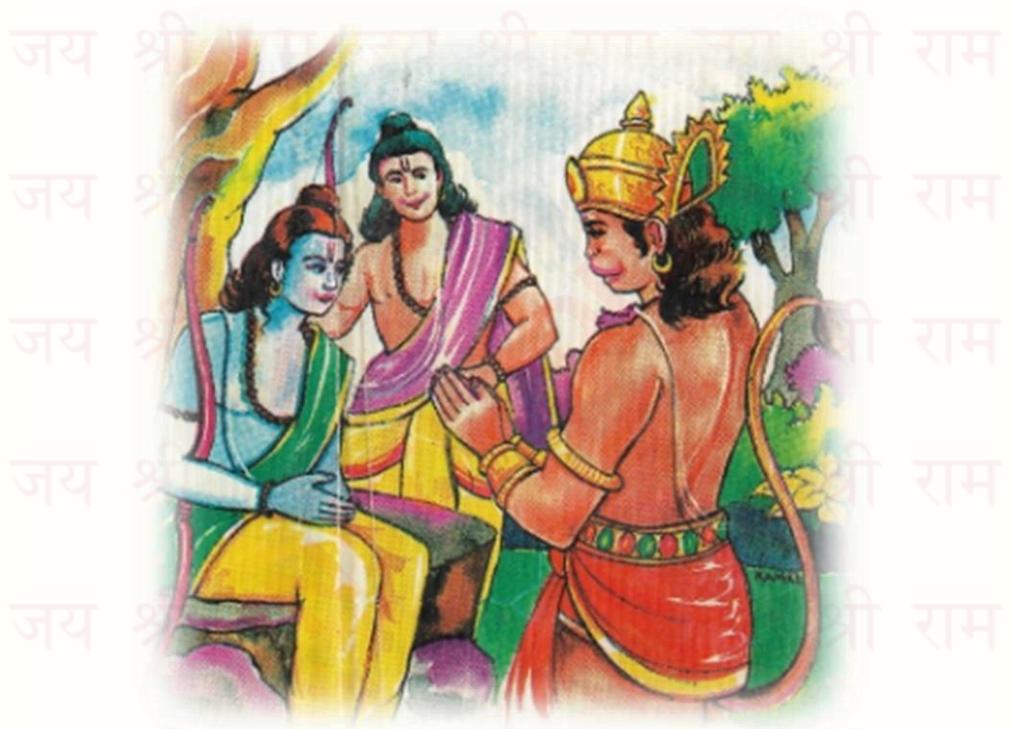
अर्थः श्री हनुमानजी! आपकी जय हो। आपका ज्ञान और गुण अथाह है। हे कपीश्वर! आपकी जय हो। तीनों लोकों (स्वर्गलोक, भू-लोक और पाताल-लोक) में आपकी कीर्ति है।

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

रामदूत अतुलित बल धामा।
अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा॥



अर्थः हे पवनसुत अंजनीनन्दन! श्रीरामदूत! आपके समान, दूसरा कोई बलवान नहीं है।

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम
महावीर बिक्रम बजरंगी।
कुमति निवार सुमति के संगी॥



अर्थः हे महावीर बजरंगबली! आप विशेष पराक्रम वाले हैं। आप दुर्बुद्धि को दूर करते हैं और अच्छी बुद्धिवालों के सहायक हैं।

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

कंचन बरन विराज सुबेसा ।
कानन कुण्डल कुंचित केसा ॥



अर्थः आप सुनहले रंग, सुन्दर वस्त्रों, कानों में कुण्डल और धुंघराले बालों में सुशोभित हैं।

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ

हाथ बज्र औ ध्वजा विराजै ।
कांधे मूंज जनेऊ साजै ।



अर्थः आपके हाथ में वज्र और ध्वजा है तथा कन्धे पैर मूँज का जनेउ शोभायमान है।

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम
जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम
संकर सुवन केसरीनंदन।
तेज प्रताप महा जग बन्दन॥



अर्थः हे शंकर के अवतार। हे केसरी-नन्दन! आपके पराक्रम और महान यश की संसार भर में वन्दना होती है।

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ

विद्यावान् गुनी अति चातुर ।
राम काज करिबे को आतुर ॥

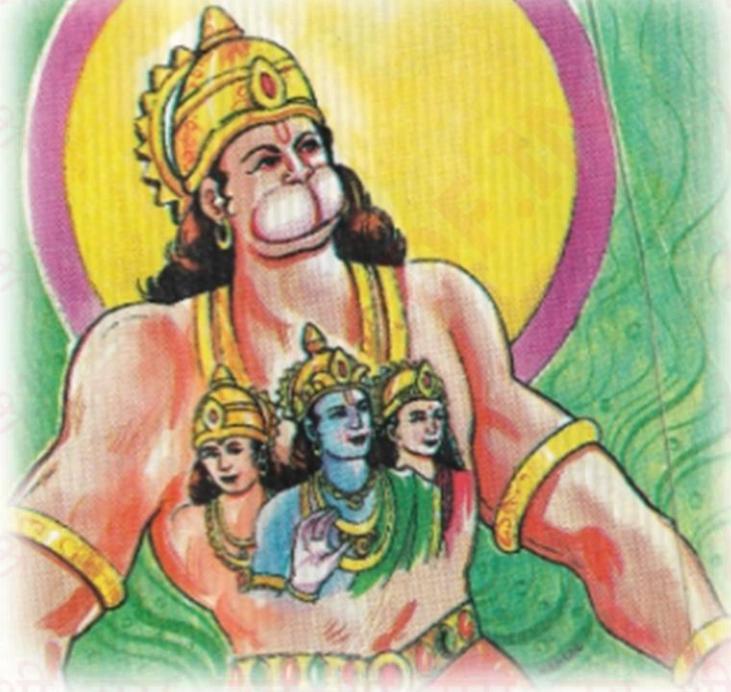


अर्थः आप प्रकाण्ड विद्यानिधान हैं, गुणवान् और अत्यन्त कार्यकुशल होकर श्रीराम-काज करने के लिएउत्सुक रहते हैं।

ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया ।

राम लखन सीता मन बसिया ॥

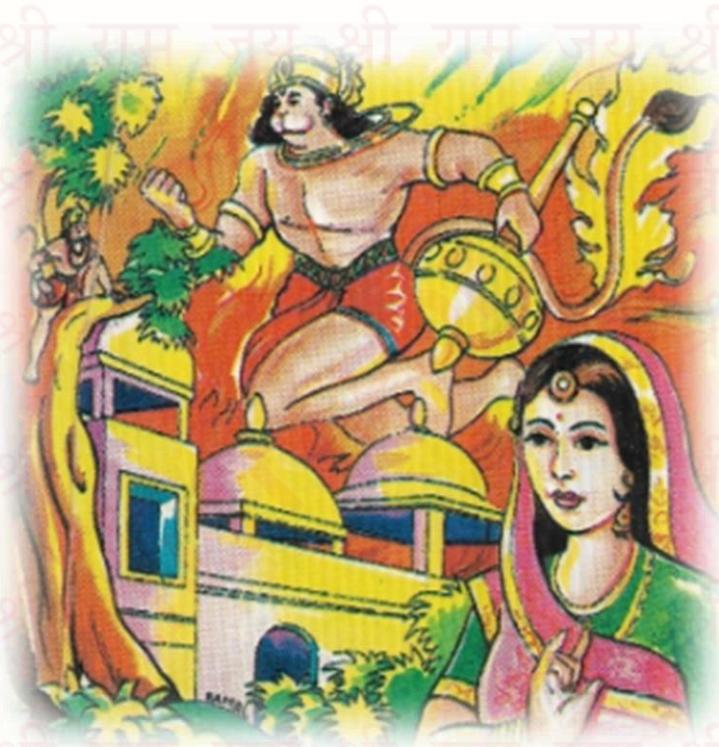


अर्थः आप श्रीराम के चरित्र सुनने में आनन्द - रस लेते हैं। श्री राम, सीता और लक्ष्मण आपके हृदय में बसते हैं।

ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ

सुक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा।

विकट रूप धरि लंक जरावा ॥



अर्थः आपने अपना बहुत छोटा रूप धारण करके सीता माँ को दिखाया तथा भयंकर रूप धारण करके लंका को जलाया।

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

भीम रूप धरि असुर संहारे।

रामचंद्र के काज संवारे॥



अर्थः आपने विकराल रूप धारण करके राक्षसों को मारा और श्रीरामचंद्र के उद्देश्यों को सफल बनाने में सहयोग दिया।

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम
जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

लाय संजीवन लखन जियाये।

श्रीरघुवीर हरषि उर लाये॥



अर्थः आपने संजीवनी बूटी लाकर लक्ष्मणजी को जिलाया? जिससे
श्रीरघुवीर ने हर्षित होकर आपको अपने हृदय से लगा लिया।

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम
जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

रघुपति कीन्हीं बहुत बड़ाई।
तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई॥



अर्थः हे पवनसुत ! श्रीरामचन्द्रजी ने आपकी बहुत प्रशंसा की और कहा कि तुम मेरे भरत जैसे प्यारे भाई हो ।

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ

सहस बदन तुम्हरो जस गावैं।

अस कहि श्रीपति कंठ लगावै ॥



अर्थः श्री राम ने आपको यह कहकर हृदय से लगा लिया कि तुम्हारा यश हजार-मुख से सराहनीय है।

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम
जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा ।
नारद सारद सहित अहीसा ॥



अर्थः श्री सनक, श्रीसनातन, श्रीसनकुमार आदि मुनि, ब्रह्मा आदि
देवता, नारदजी, सरस्वतीजी, शेषनागजी ।

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

जम कुबेर दिगपाल जहां ते।

कवि कोबिद कहि सके कहां ते॥



जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

अर्थः यमराज, कुबेर आदि सब दिशाओं के रक्षक, कवि, विद्वान्, पण्डित या कोई भी आपके यश का पूरी तरह वर्णन नहीं कर सकते।

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

तुम उपकार सुग्रीवहि कीन्हा ।
राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥



अर्थः आपने सुग्रीवजी को श्रीराम से मिलाकर उपकार किया, जिसके कारण वे राजा बने!

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम
तुम्हरो मंत्र विभीषण माना।
लंकेस्वर भए सब जग जाना॥



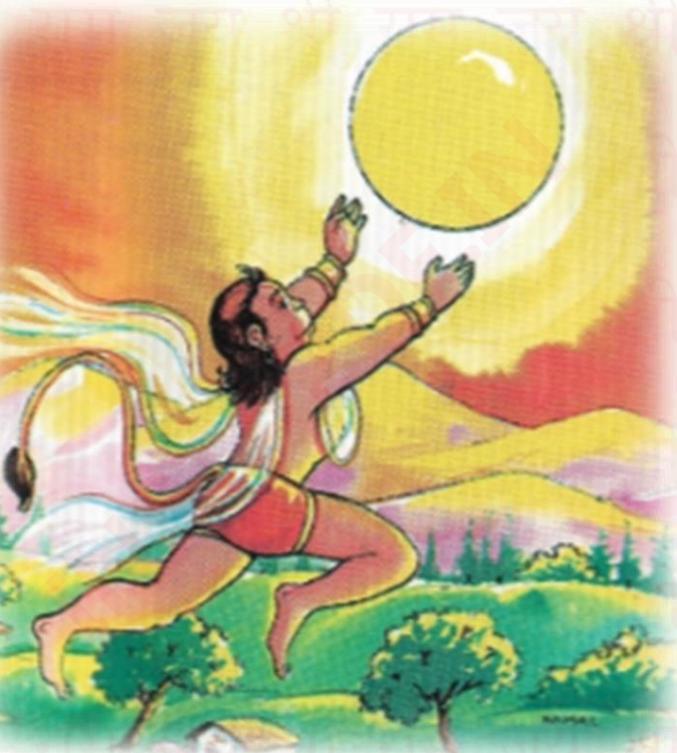
अर्थः आपके उपदेश का विभीषण ने पूर्णतः पालन किया, इसी कारण लंका के राजा बने, इसको सब संसार जानता है।

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

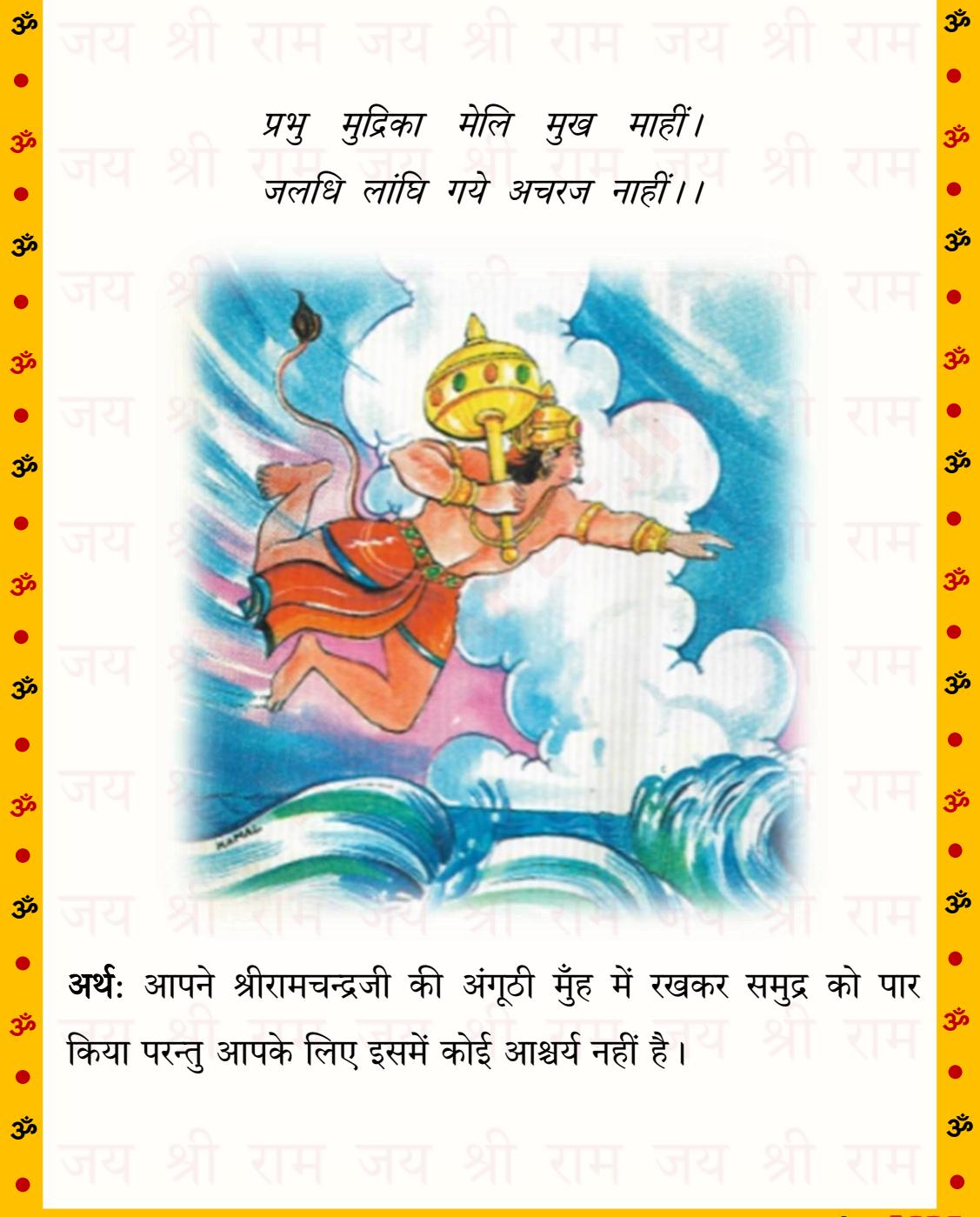
ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ

जुग सहस्र जोजन पर भानू ।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥



अर्थ: जो सूर्य इतने योजन दूरी पर है कि उस पर पहुँचने के लिए हजारों युग लगें। उस हजारों योजन की दूरी पर सूर्य को आपने एक मीठा फल समझ कर निय कर निगल लिया।

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

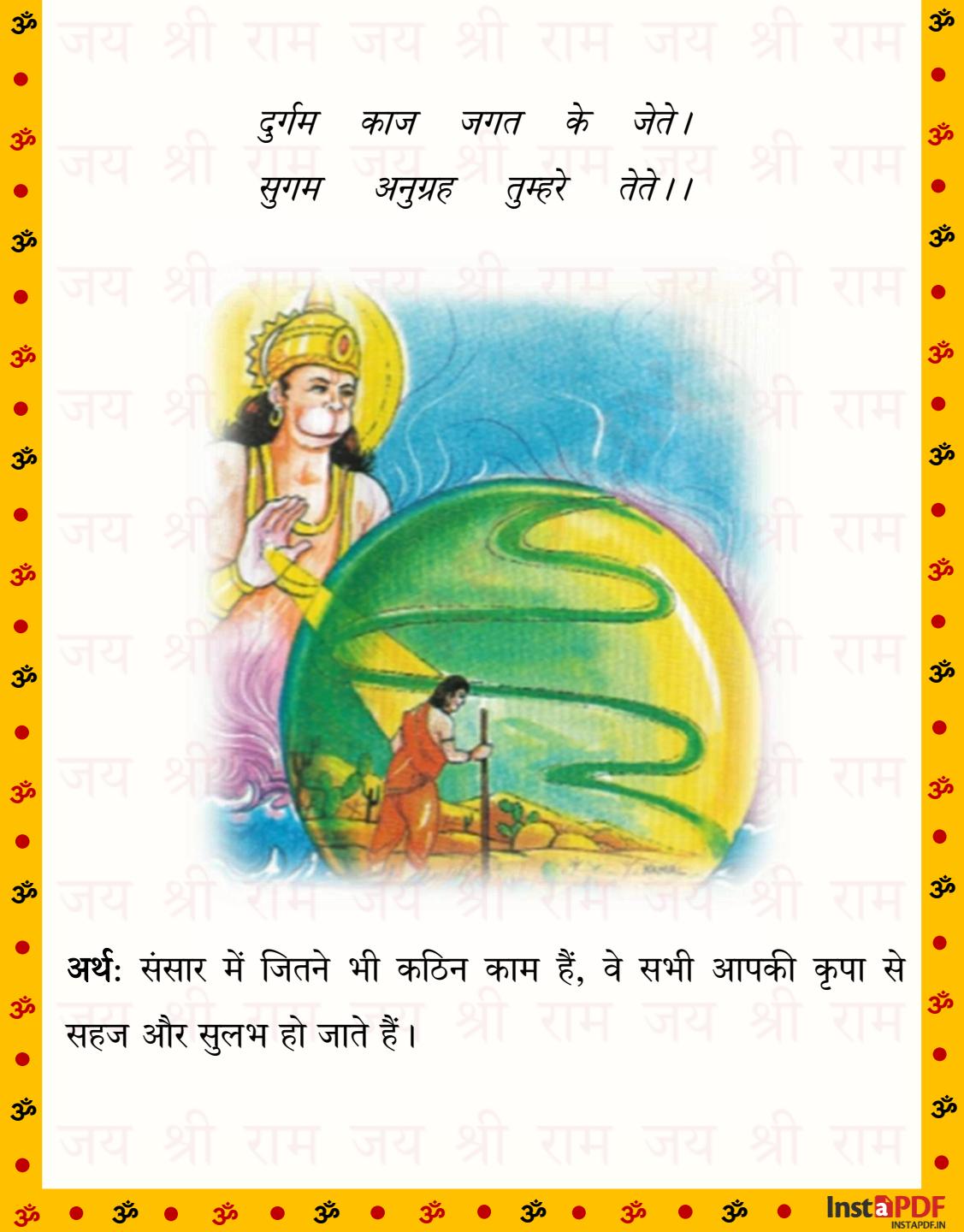


प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं।

जलधि लांधि गये अचरज नाहीं॥

अर्थः आपने श्रीरामचन्द्रजी की अंगूठी मुँह में रखकर समुद्र को पार किया परन्तु आपके लिए इसमें कोई आश्वर्य नहीं है।

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ



दुर्गमि काज जगत के जेते।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते॥

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

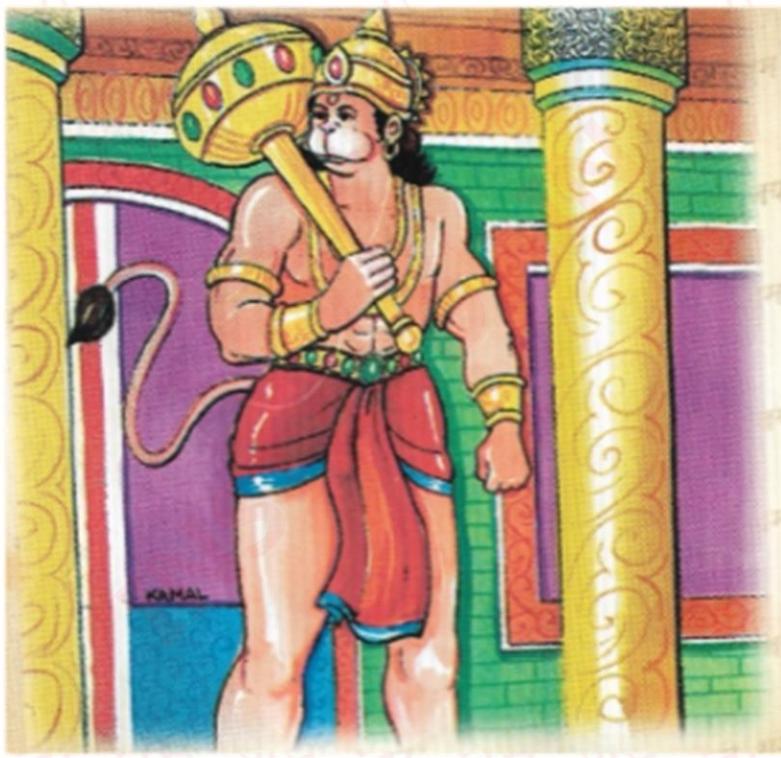
अर्थः संसार में जितने भी कठिन काम हैं, वे सभी आपकी कृपा से सहज और सुलभ हो जाते हैं।

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

राम दुआरे तुम रखवारे।
होत न आज्ञा बिनु पैसारे॥



अर्थः श्रीरामचन्द्रजी के द्वार के आप रखवाले हैं, जिसमें आपकी आज्ञा के बिना किसी को प्रवेश नहीं मिल सकता। (अर्थात् श्रीराम कृपा पाने के लिए आपको प्रसन्न करना आवश्यक है।)

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

सब सुख लहै तुम्हारी सरना।
तुम रक्षक काहूं को डर ना॥



अर्थः जो भी आपकी शरण में आते हैं उन सभी को आनन्द एवं सुख प्राप्त होता है और जब आप रक्षक हैं, तो फिर किसी का डर नहीं रहता।

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम
जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

आपन तेज सम्हारो आपै।
तीनों लोक हांक तें कांपै॥



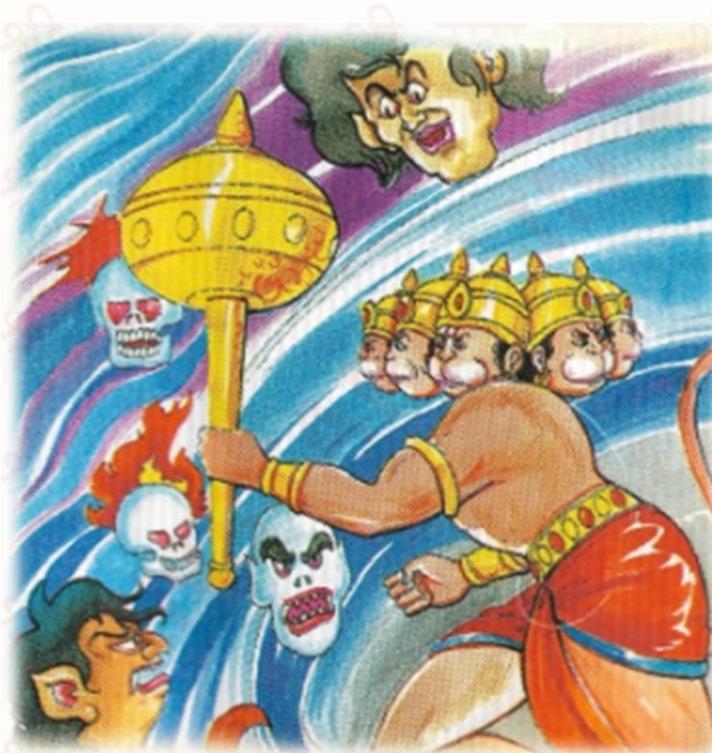
अर्थः आपके सिवाय आपके वेग को कोई नहीं रोक सकता। आपकी गर्जना से तीनों लोक कांप जाते हैं।

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम
भूत पिसाच निकट नहिं आवै।
महावीर जब नाम सुनावै॥



अर्थः हे पवनपुत्र आपका 'महावीर' हनुमानजी नाम सुनकर भूत-पिशाच आदि दुष्ट आत्माएँ पास भी नहीं आ सकतीं।

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम
नासै रोग हरै सब पीरा।
जपत निरंतर हनुमत बीरा॥



अर्थः वीर हनुमानजी! आपका निरन्तर जप करने से सब रोग नष्ट हो जाते हैं और सब कष्ट दूर हो जाते हैं।

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम
नासै रोग हरै सब पीरा।
जपत निरंतर हनुमत बीरा॥



अर्थः वीर हनुमानजी! आपका निरन्तर जप करने से सब रोग नष्ट हो जाते हैं और सब कष्ट दूर हो जाते हैं।

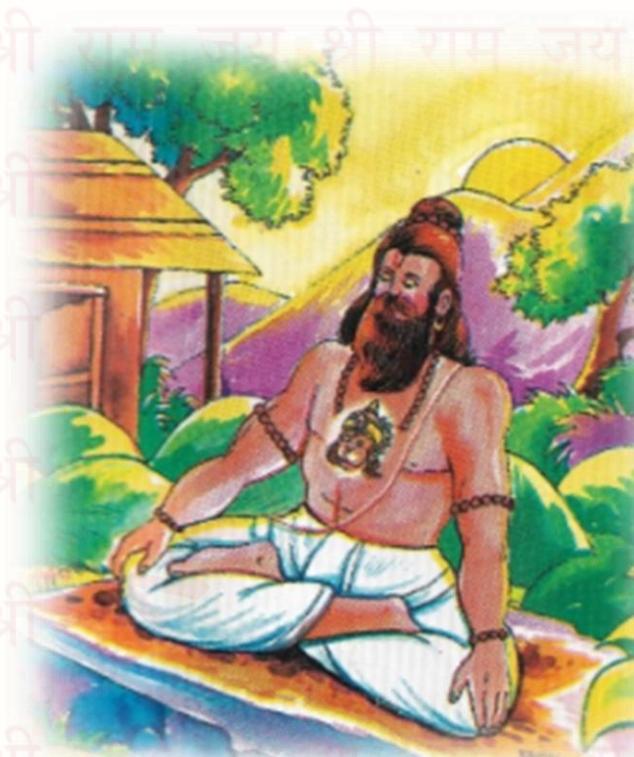
जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ

संकट तें हनुमान छुड़ावै।

मन क्रम बचन ध्यान जो लावै॥



अर्थः हे हनुमानजी! विचार करने में, कर्म करने में और बोलने में जिनका ध्यान आप में लगा रहता है, उनको सब दुःखों से आप दूर कर देते हैं।

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

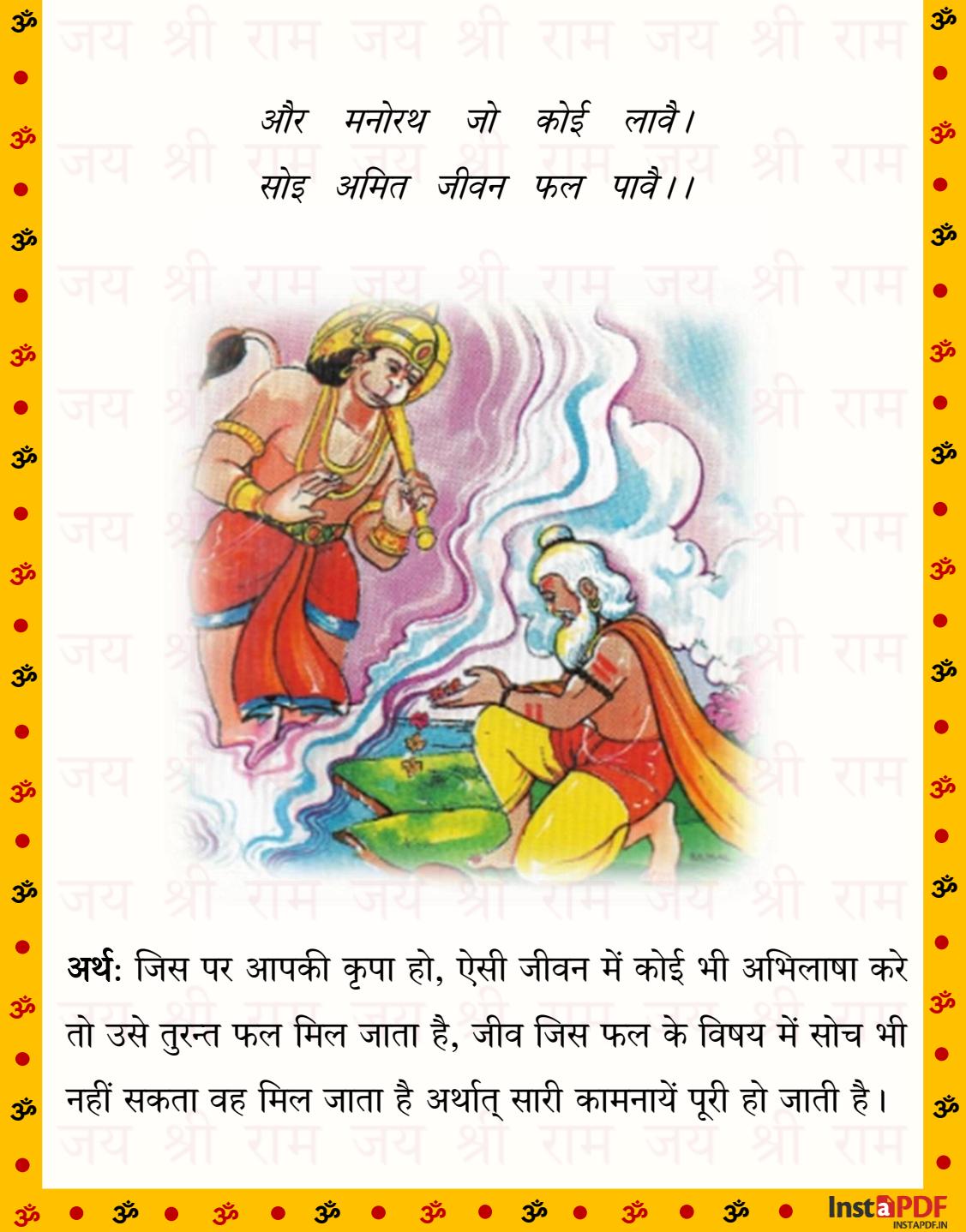
सब पर राम तपस्वी राजा ।

तिन के काज सकल तुम साजा ।



अर्थः तपस्वी राजा श्रीरामचन्द्रजी सबसे श्रेष्ठ हैं, उनके सब कार्यों को आपने सहज में कर दिया ।

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ



और मनोरथ जो कोई लावै।

सोइ अमित जीवन फल पावै॥

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

चारों जुग परताप तुम्हारा ।
है परसिद्ध जगत उजियारा ॥

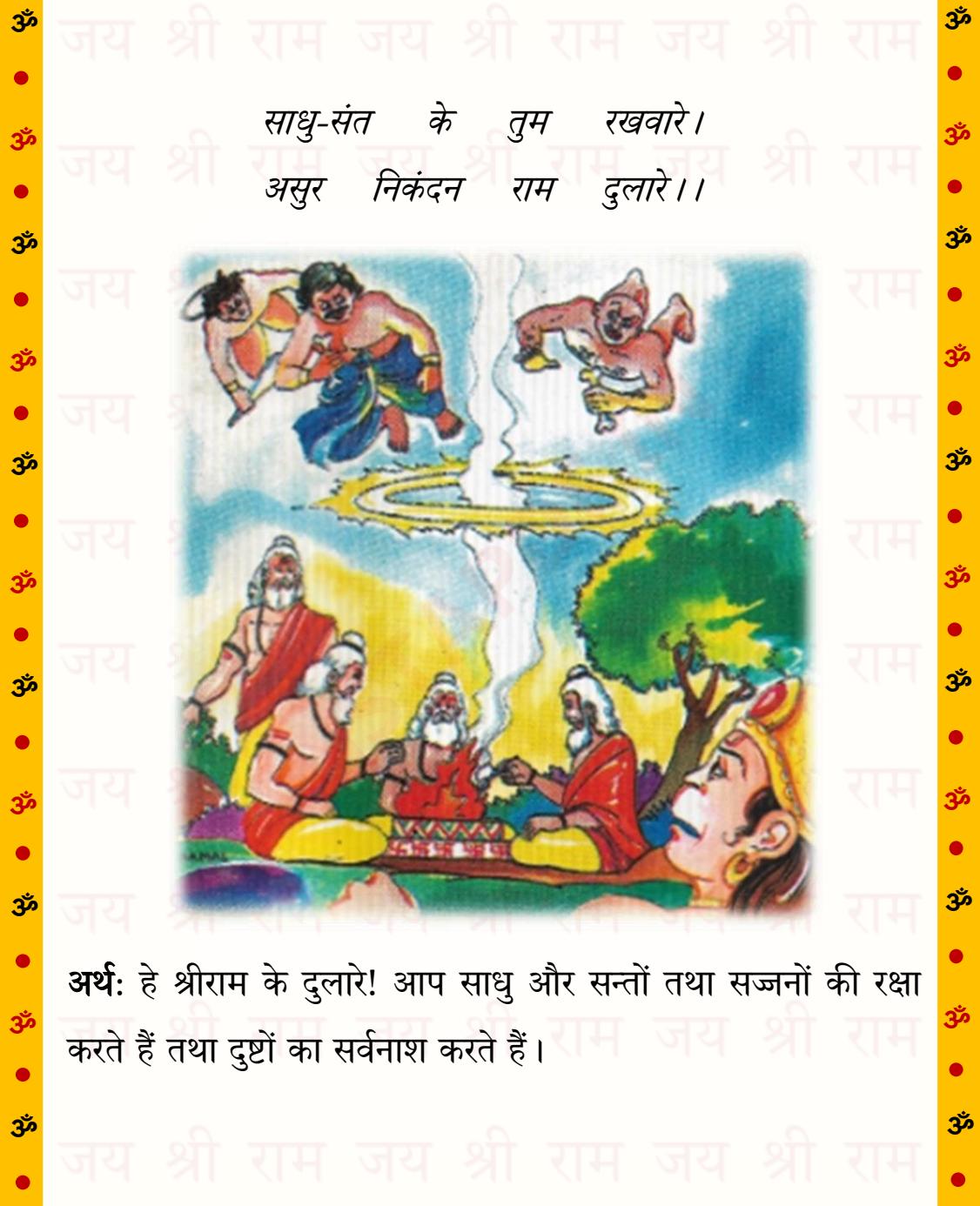


अर्थः आपका यश चारों युगों (सत्युग, त्रेता, द्वापर तथा कलियुग) में
फैला हुआ है, सम्पूर्ण संसार में आपकी कीर्ति सर्वत्र प्रकाशमान है।

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ



अर्थः हे श्रीराम के दुलारे! आप साधु और सन्तों तथा सज्जनों की रक्षा करते हैं तथा दुष्टों का सर्वनाश करते हैं।

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम
जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता।

अस बर दीन जानकी माता॥



अर्थः हे हनुमंत लालजी आपको माता श्री जानकी से ऐसा वरदान मिला हुआ है, जिससे आप किसी को भी 'आठों सिद्धियाँ' और 'नौ निधियाँ' (सब प्रकार की सम्पत्ति) दे सकते हैं।

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

राम रसायन तुम्हरे पासा ।

सदा रहो रघुपति के दासा ॥

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

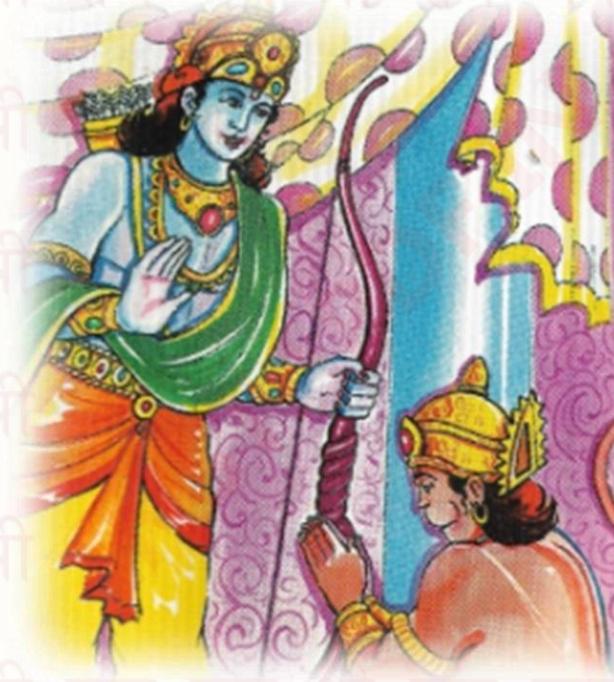
जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

अर्थः आप निरन्तर श्री रघुनाथ जी की शरण में रहते हैं, जिससे आपके

पास वृद्धावस्था और असाध्य रोगों के नाश के लिए 'राम-नाम' रूपी

औषधी हैं।



जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

राम रसायन तुम्हरे पासा ।
सदा रहो रघुपति के दासा ॥

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम



जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

अर्थः आप निरन्तर श्री रघुनाथ जी की शरण में रहते हैं, जिससे आपके पास वृद्धावस्था और असाध्य रोगों के नाश के लिए 'राम-नाम' रूपी औषधी हैं।

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

तुम्हरे भजन राम को पावै।

जन्म-जन्म के दुःख बिसरावै॥



अर्थः आपका भजन करने से श्रीरामजी प्राप्त होते हैं और जन्म-जन्मांतर के दुःख दूर होते हैं।

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम
अन्तकाल रघुवर पुर जाई।
जहां जन्म हरि-भक्त कहाई॥



अर्थः अन्त समय श्री रघुनाथजी के धाम को जाते हैं और यदि फिर भी मृत्युलोक में जन्म लेंगे तो भक्ति करेंगे और श्री राम भक्त कहलायेंगे।

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम
जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

और देवता चित्त न धरई।
हनुमत सेइ सर्व सुख करई॥



अर्थः हे हनुमानजी! आपकी सेवा करने से सब प्रकार से सुख - मिलते हैं, फिर किसी देवता की पूजा करने की आवश्यकता नहीं रहती।

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

संकट कटै मिटै सब पीरा।
जो सुमिरै हनुमत बलबीरा॥

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम



राम

राम

राम

राम

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

अर्थः हे वीर हनुमानजी! जो आपका स्मरण करता है, उसके सब संकट
कट जाते हैं और सब पीड़ा मिट जाती है।

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम
जै जै जै हनुमान गोसाई।
कृपा करहु गुरुदेव की नाई॥

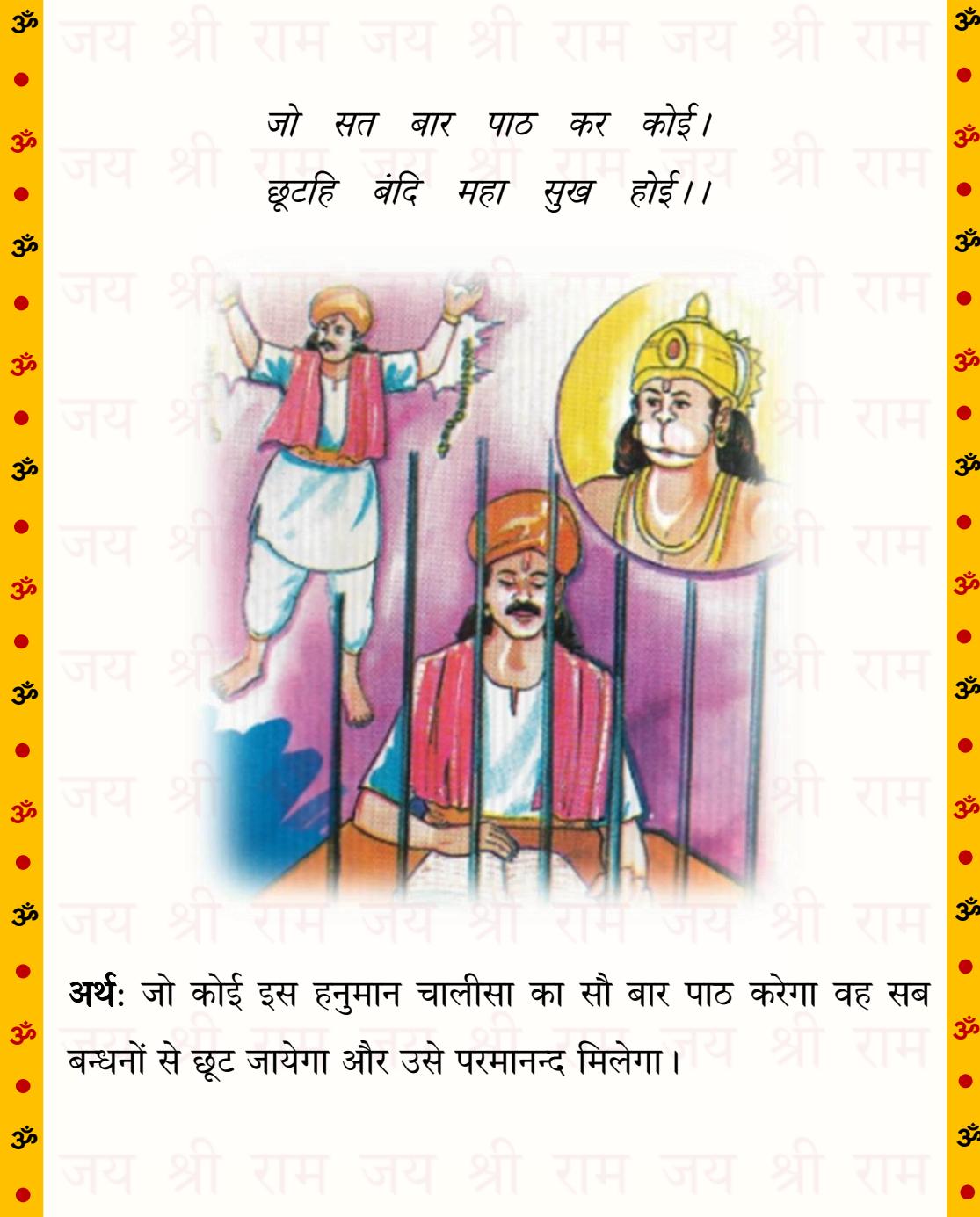


अर्थः हे स्वामी हनुमानजी ! आपकी जय हो, जय हो, जय हो । आप
मुझ पर कृपालु श्री गुरुजी के समान कृपा कीजिए ।

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ



जो सत बार पाठ कर कोई।

छूटहि बंदि महा सुख होई॥

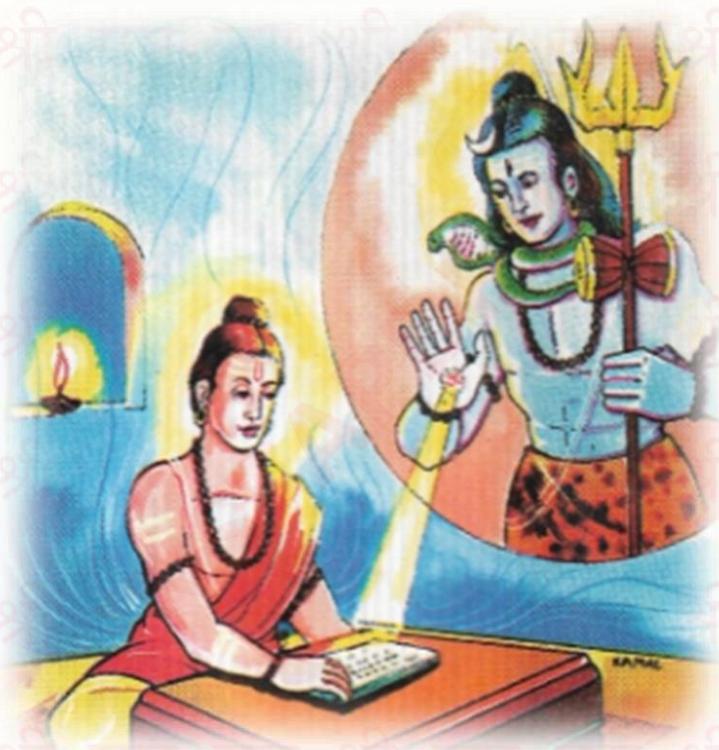
अर्थः जो कोई इस हनुमान चालीसा का सौ बार पाठ करेगा वह सब बन्धनों से छूट जायेगा और उसे परमानन्द मिलेगा।

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा ।
होय सिद्धि साखी गौरीसा ॥



अर्थः भगवान शंकर ने यह चालीसा लिखवाया, इसलिए वे साक्षी हैं कि
जो इसे पढ़ेगा उसे निश्चय ही सफलता प्राप्त होगी ।

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम
तुलसीदास सदा हरि चेरा।
कीजै नाथ हृदय मंह डेरा॥



अर्थः हे नाथ हनुमानजी । “तुलसीदास” सदा ही “श्रीराम” का दास है ।
इसलिए आप उसके हृदय में निवास कीजिए ।

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

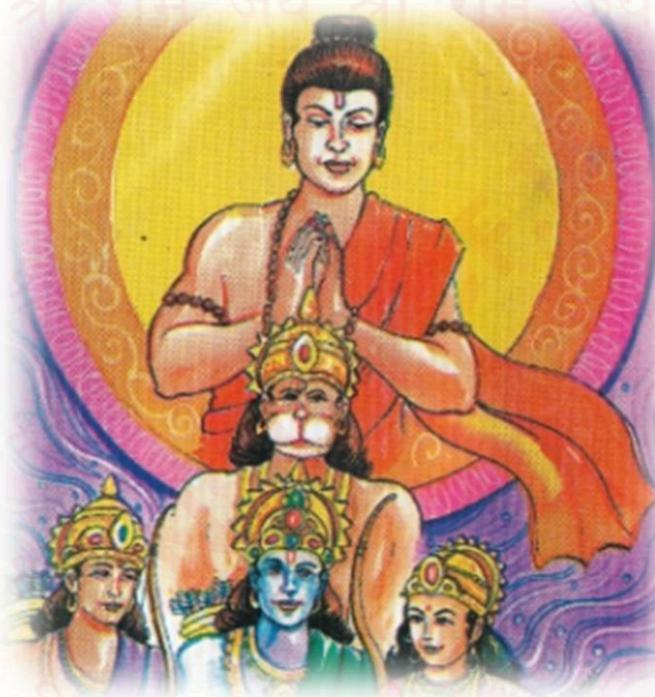
ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम ॥ दोहा ॥

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूर्ति रूप / रामी राम
लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप //



अर्थः हे संकटमोचन पवनकुमार! आप आनंद मंगलों के स्वरूप हैं, हे
देवराज! आप श्रीराम, सीताजी और लक्ष्मण सहित मेरे हृदय में निवास
कीजिए।

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

संकटमोचन हनुमानाष्टक का पाठ

बाल समय रबि भक्षि लियो तब, तीनहुं लोक भयो अंधियारे ।

ताहि सों त्रास भयो जग को, यह संकट काहु सों जात न टारो ॥

देवन आन करि बिनती तब, छांडि दियो रबि कष्ट निवारो

को नहिं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारे ॥ 1 ॥

बालि की त्रास कपीस बसै गिरि, जात महाप्रभु पंथ निहारो ।

चौकि महा मुनि शाप दिया तब, चाहिय कौन बिचार बिचारो ॥

के द्विज रूप लिवाय महाप्रभु, सो तुम दास के शोक निवारो ।

को नहिं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारे ॥2॥

अंगद के संग लेन गये सिय, खोज कपीस यह बैन उचारो ।

जीवत ना बचिहौ हम सो ज बिना सधि लाय इहाँ पग धारे ॥

हेरि थके तट सिंध सबै तब लाय सिया-सधि प्राण उबारो ।

को नहिं जानत ^{१४} जग में कपि संकटमोचन नाम तिहारे ॥३॥

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम
रावन त्रास दई सिय को सब,रक्षासि सों कहि शोक निवारो ।
ताहि समय हनुमान महाप्रभु,जाय महा रजनीचर मारो ॥
चाहत सीय अशोक सों आगि सु,दै प्रभु मुद्रिका शोक निवारो ।
को नहिं जानत है जग में कपि,संकटमोचन नाम तिहारो ॥4 ॥
बाण लग्यो उर लछिमन के तब,प्राण तजे सुत रावण मारो ।
लै गृह बैद्य सुषेन समेत,तबै गिरि द्रोण सु बीर उपारो ॥
आनि सजीवन हाथ दई तब,लछिमन के तुम प्राण उबारो ।
को नहिं जानत है जग में कपि,संकटमोचन नाम तिहारो ॥5 ॥
रावण युद्ध अजान कियो तब,नाग कि फांस सबै सिर डारो ।
श्रीरघुनाथ समेत सबै दल,मोह भयोयह संकट भारो ॥
आनि खगेस तबै हनुमान जु,बंधन काटि सुत्रास निवारो ।
को नहिं जानत है जग में कपि,संकटमोचन नाम तिहारो ॥6 ॥
बंधु समेत जबै अहिरावन,लै रघुनाथ पाताल सिधारो ।
देविहिं पूजि भली बिधि सों बलि,देउ सबै मिति मंत्र बिचारो ॥
जाय सहाय भयो तब ही,अहिरावण सैन्य समेत सँहारो ।
को नहिं जानत है जग में कपि,संकटमोचन नाम तिहारो ॥7 ॥

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

जय काज किये बड़ देवन के तुम,वीर महाप्रभु देखि बिचारो ।

कौन सो संकट मोर गरीब को,जो तुमसों नहिं जात है टारो ॥

बेगि हरो हनुमान महाप्रभु,जो कछु संकट होय हमारो ।

को नहिं जानत है जग में कपि,संकटमोचन नाम तिहारो ॥८॥

॥ दोहा ॥

॥लाल देह लाली लसे,अरू धरि लाल लंगूर ।
बज्र देह दानव दलन,जय जय जय कपि सूर ॥

॥ इति संकटमोचन हनुमानाष्टक सम्पूर्ण ॥

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम
जय जय लखन प्रान के दाता। आतुर है दुख करहु निपाता ॥

जै हनुमान जयति बल-सागर। सुर-समूह-समरथ भट-नागर ॥

ॐ हनु हनु हनु हनुमंत हठीले। बैरिहि मारु बज्र की कीले ॥

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमंत कपीसा। ॐ हुं हुं हुं हनु अरि उर सीसा ॥

जय अंजनि कुमार बलवंता। शंकरसुवन बीर हनुमंता ॥

बदन कराल काल-कुल-घालक। राम सहाय सदा प्रतिपालक ॥

भूत, प्रेत, पिसाच निसाचर। अग्नि बेताल काल मारी मर ॥

इन्हें मारु, तोहि सपथ राम की। राखु नाथ मरजाद नाम की ॥

सत्य होहु हरि सपथ पाइ कै। राम दूत धरु मारु धाइ कै ॥

जय जय जय हनुमंत अगाधा। दुख पावत जन केहि अपराधा ॥

पूजा जप तप नेम अचारा। नहिं जानत कछु दास तुम्हारा ॥

बन उपबन मग गिरि गृह माहीं। तुम्हरे बल हौं डरपत नाहीं ॥

जनकसुता हरि दास कहावौ। ताकी सपथ बिलंब न लावौ ॥

जै जै जै धुनि होत अकासा। सुमिरत होय दुसह दुख नासा ॥

चरन पकरि, कर जोरि मनावौं। यहि औसर अब केहि गोहरावौं ॥

उठु, उठु, चलु, तोहि राम दुहर्ई। पायঁ पराँ, कर जोरि मनाई ॥

ॐ चं चं चं चं चं चपल चलंता। ॐ हनु हनु हनु हनुमंता ॥

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

ॐ हं हं हाँक देत कपि चंचल । ॐ सं सं सहमि पराने खल-दल ॥

अपने जन को तुरत उबारै । सुमिरत होय आनंद हमारै ॥

यह बजरंग-बाण जेहि मारै । ताहि कहै फिरि कवन उबारै ॥

पाठ करै बजरंग-बाण की । हनुमत रक्षा करै प्रान की ॥

यह बजरंग बाण जो जापै । तासों भूत-प्रेत सब कापै ॥

धूप देय जो जपै हमेसा । ताके तन नहिं रहै कलेसा ॥

॥ दोहा ॥

उर प्रतीति दृढ़, सरन है, पाठ करै धरि ध्यान ।
बाधा सब हर, करैं सब काम सफल हनुमान ॥

जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

श्री राम अवतार स्तोत्र

भये प्रगट कृपाला, दीनदयाला कौसल्या हितकारी
हरषित महतारी, मुनि मनहारी अद्भुत रूप बिचारी
लोचन अभिरामा, तनु घनस्यामा, निज आयुध भुज चारी
भूषन वनमाला, नयन बिसाला, सोभासिंधु खरारी
कह दुइ कर जोरी, अस्तुति तोरी, केहित बिधि करूं अनंता
माया गुन ग्यानातीत अमाना, वेद पुरान भनंता
करुना सुख सागर, सब गुन आगर, जेहि गावहि श्रुति संता
सो मम हित लागी, जन अनुरागी, भयौ प्रकट श्रीकंता
ब्रह्मांड निकाया, निर्मित माया, रोम रोम प्रति बेद कहे
मम उद सो बासी, यह उपहासी, सुनत धीर मति थिर न रहे
उपजा जब ग्याना, प्रभु मुसुकाना, चरित बहुत बिधि कीन्ह चहे
कहि कथा सुहाई, मातु बुझाई, जेहि प्रकार सुत प्रेम लहे
माता पुनि बोली, सो मति डोली, तजहु तात यह रूपा
कीजे सिसुलीला, अति प्रियसीला, यह सुख पराम अनूपा
सुन बचन सुजाना, रोदन ठाना, होई बालक सुरभूपा
यह चरित जे गावहि, हरिपद पावहि, तेहि न परहि भवकूपा ॥।
॥इति श्रीरामावतार स्तोत्र संपूर्णम् ॥

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

श्री राम-स्तुति

श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारुण
नवकंज-लोचन , कंज-मुख , कर-कंज पद कंजारुण ।
कर्दंप अगणित अमित छवि , नवनील-नीरद सुंदरं
पट पीत मानहु तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरं ।
भजु दीनबंधु दिनेश दानव - दैत्यवंश - निकंदनं
रघुनंद आनंदकंद कौशलचंद्र दशरथ - नन्दनम् ।
सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदारु अंग विभूषणं
आजानुभुज शर - चाप - धर , संग्राम - जित - खरदुषणं ।
इति वदति तुलसीदास शंकर - शेष - मुनि - मन - रंजनं
मम हृदय - कंज निवास करु , कामादि खलदल - गंजनं ।

ੴ

मनु जाहिं राचेउ मिलहिं सो बरु सहज सुंदर साँवरो ।
करुणा निधान सुजान सीलु सनेह जानत रावरो ।
एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हिय हरषी अली
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली ।

| सोरठा |

जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि
मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

श्री हनुमान जी की आरती

आरती कीजै हनुमान लला की । दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ।
जाके बल से गिरिवर कांपे । रोग दोष जाके निकट न झाँके ।
अंजनि पुत्र महाबलदायी । संतान के प्रभु सदा सहाई ।
दे बीरा रघुनाथ पठाए । लंका जारी सिया सुध लाए ।

लंका सो कोट समुद्र सी खाई। जात पवनसुत बार न लाई।
लंका जारी असुर संहारे। सियारामजी के काज संवारे।

लक्ष्मण मूळित पडे सकारे। आणि संजीवन प्राण उबारे।
पैठी पताल तोरि जमकारे। अहिरावण की भुजा उखाडे।

बाएं भुजा असुर दल मारे। दाहिने भुजा संतजन तारे।
 सुर-नर-मुनि जन आरती उतारे। जै जै जै हनुमान उचारे।
 कंचन थार कपूर लौ छाई। आरती करत अंजना माई।
 लंकविधंस कीन्ह रघुराई। तुलसीदास प्रभु कीरति गाई।

जो हनुमानजी की आरती गावै। बसी बैकुंठ परमपद पावै।
आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्ट दलन रघुनाथ कला की।

ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ



Hi! We're InstaPDF. A dedicated portal where one can download any kind of PDF files for free, **with just a single click.**

<https://instapdf.in>

READ DISCLAIMER

ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ ● ॐ